ब्राक मीडिया

डॉ. भीमराव अंबेडकर महाविद्यालय के मीडिया छात्रों का प्रायोगिक समाचार पत्र

नई दिल्ली शुक्रवार 01 मार्च , 2024 | अंक 3 , पृष्ठ संख्या 1

डॉ. भीमराव अंबेडकर कॉलेज की ICC कमेटी ने की फिल्म स्क्रीनिंग

नई दिल्ली : दिल्ली विश्वविद्यालय के डॉ. भीमराव अंबेडकर महाविद्यालय की आंतरिक समिति ने फिल्म स्क्रीनिंग का कार्यक्रम आयोजित किया। फिल्म स्क्रीनिंग का विषय "महिला उत्पीड़न की रोकथाम" रखा गया। आईसीसी कमेटी की पीठासीन अधिकारी प्रो. शशि रानी ने छात्रों को कार्यस्थल पर महिलाओं का यौन उत्पीडन (रोकथाम निषेध व निवारण अधिनियम 2013) से अवगत कराया | उन्होंने बताया कि यौन उत्पीडन लैंगिक आधार पर होने वाले भेदभाव का ही एक अन्य रूप है। कमेटी की पीठासीन अधिकारी के उद्बोधन के बाद सभागार में महिला उत्पीड़न संबंधित जागरूकता के लिए शॉर्ट फिल्म और डॉक्यूमेंट्री कि स्क्रीनिंग की गई। फिल्म स्क्रीनिंग के दौरान महाविद्यालय सभागार में लगभग 200 छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे। फिल्म स्क्रीनिंग के कार्यक्रम में प्रो. शशि रानी के साथ-साथ कमेटी के अन्य सदस्य डॉ. विक्टोरिया एन चानू और प्रो. जया वर्मा भी उपस्थित रहे। महेश सिंह और कनक कसाना आईसीसी के स्टूडेंट मेंबर भी अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते नजर आए। कार्यक्रम के अंत में प्रो. शशि रानी ने कहा कि महाविद्यालय में किसी भी विद्यार्थी के साथ शोषण होने पर वह कमेटी के किसी भी मेंबर से संपर्क कर सकते हैं और शिकायत बॉक्स में भी अपनी शिकायत डाल सकते हैं। उन्होंने आगे कहा कि आईसीसी ऐसे कार्यक्रमों के माध्यम से हमेशा विद्यार्थियों को जागरूक करने का कार्य करती रही है तथा आगे भी इसी तरह के कार्यक्रम महाविद्यालय में होते रहेंगे।

- दिव्यांशु राठौर

तकनीक ने किया बौद्धिक क्षमता को ख़त्म विषय पर वाद विवाद प्रतियोगिता का आयोजन

नई दिल्ली : दिल्ली विश्वविद्यालय के डॉ. भीमराव अम्बेडकर कॉलेज में 12 फरवरी, 2024 को संवाद वाद-विवाद समिति के द्वारा तकनीकी निर्भरता ने हमारी बौद्धिक क्षमता को समाप्त कर दिया है, विषय पर अंतःमहाविद्यालय वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें कॉलेज के विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। निर्णायक के रूप में कॉलेज वाद विवाद समिति के पूर्व संयोजक प्रो. राजेश उपाध्याय, हिंदी विभाग के प्रो. रामप्रकाश द्विवेदी और डॉ. सुनीता मलिक रहीं। इस प्रतियोगिता के संयोजक प्रो. बिजेंदर कुमार और सह सयोंजिका डॉ. दिलजीत कौर रहीं। प्रो बिजेंद्र कुमार ने बताया कि आज तकनीक ने सभी को समतल जमीन पर खड़ा कर दिया है। तकनीक सभी को अभिव्यक्ति का समान अवसर प्रदान करती है, हालांकि दुनिया में अभी भी डिजिटल विभाजन है और एक बड़ी आबादी अभी भी तकनीकी सुविधा से वंचित है।प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने अपने वाकपटुता का प्रदर्शन करते हुए, विषय के पक्ष और विपक्ष में अपने विचार रखे । प्रतियोगिता के प्रथम

पुरस्कार विजेता अभिषेक श्रीवास्तव ने अपने वक्तव्य में तकनीक को मानव सभ्यता के लिए वरदान बताया। द्वितीय पुरस्कार विजेता रूपाली शर्मा ने बताया कि आज युवा पीढ़ी तकनीक के अत्यधिक उपभोग का शिकार हो गई है। तृतीय पुरस्कार विजेता सत्यम वर्मा के कहा कि आज तकनीकी ने मानव को महामानव बना दिया है। प्राचार्य प्रो. रबींद्रनाथ दुबे ने प्रतिभागियों का उत्साह बढ़ाते हुए कहा कि किसी प्रतियोगिता में हिस्सा लेना सबसे अधिक जरूरी है, जीतना और हारना तो जीवन का एक हिस्सा है। इस प्रकार की प्रतियोगिताएं छात्रों को एक मंच प्रदान करती हैं। वाद विवाद प्रतियोगिता विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने का मंच है। उन्होंने कहा कि इस दुनिया में सत्य सारगर्भित नहीं हैं। सभी इस यथार्थ की दुनिया में अपने अनुसार सत्य की कल्पना करते हैं। कार्यक्रम के अंत में प्रतियोगिता की सह संयोजिका डॉ. दिलजीत कौर ने सभी निर्णायक मंडल के सदस्यों को धन्यवाद ज्ञापित किया ।

अंबेडकर कॉलेज में अंतर्महाविद्यालय वाद विवाद प्रतियोगिता का आयोजन

नई दिल्ली : दिल्ली विश्वविद्यालय के डॉ. भीमराव अंबेडकर कॉलेज में अंतर्महाविद्यालय वाद विवाद प्रतियोगिता आयोजन किया गया। वाद विवाद प्रतियोगिता "कृत्रिम मेधा मनुष्यता के हित में नहीं हैं" विषय पर आयोजित की गई। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पी जी डी ए वी सांध्य की टीम के विद्यार्थियों दिव्य प्रताप सिंह और रजनीश कुमार शुक्ल ने प्राप्त किया।द्वितीय स्थान रामजस कॉलेज के देवाशीष कश्यप और ललित कृष्णा कौशिक तथा तृतीय स्थान श्यामा प्रसाद मुखर्जी कॉलेज की सुनीता चौधरी और श्रुति तमराकर ने प्राप्त किया। सांत्वना पुरस्कार डा भीमराव अंबेडकर कॉलेज के अभिषेक श्रीवास्तव और रूपाली शर्मा को मिला।

प्रतिभागियों ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तकनीक के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों के पक्ष विपक्ष में तर्क रखते हुए उसके विभिन्न पहलुओं को सामने रखा। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के व्यक्ति जीवन, देश ,समाज, राजनीति, आर्थिक,सांस्कृतिक,मनोवैज्ञानिक और अन्य क्षेत्रों में पड़ने वाले प्रभाव को प्रतिभागियों ने उदाहरणों और तर्कों के

साथ प्रस्तुत किया ।

प्रतियोगिता में निर्णायक के रूप में हंसराज कॉलेज में सहायक प्रोफेसर डा. प्रभांशु ओझा, इंडिया टूडे ग्रुप में सहायक एडिटर हिमानी दीवान और डॉ विनीत कुमार मौजूद रहे। प्रतियोगिता में कॉलेज प्राचार्य प्रो रविंद्रनाथ दूबे, कार्यक्रम संयोजक प्रो. बिजेंद्र कुमार और सह संयोजिका प्रो दिलजीत कौर उपस्थित रहे। प्राचार्य प्रो रविंद्रनाथ दूबे ने कहा कि विद्यार्थियों की तार्किक शक्ति को बढ़ाने के लिए वाद विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है। कार्यक्रम संयोजक प्रो बिजेंद्र कुमार ने कहा कि वाद विवाद प्रतियोगिता व्यक्तित्व के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है ।

वाद विवाद प्रतियोगिता का आरम्भ सरस्वती वंदना और दीप प्रज्वलन से हुआ। वाद विवाद प्रतियोगिता में लगभग तीस कॉलेजों के छात्रों ने भाग लिया।प्रतियोगिता का संचालन दिव्यांश गांधी और सी एस भारद्वाज ने किया ।

AI बेहद डरावना

नई दिल्ली : पूरी दुनिया में विज्ञान का विकास हो रहा है पर कभी इतना घातक हो जाएगा किसे पता। कुछ वक्त पहलेगAI प्रौद्योगिकी आई जिसने दुनिया को नई राह दिखाई, विकसित देशों के चेहरे पर मुस्कुराहट आई पर किसे पता था कि AI सिर्फ अच्छा नहीं बुरा भी है। यह मनुष्यों के अस्तित्व के साथ-साथ उनके जीवन में भी डर पैदा कर देगा। AI के चैट जीपीटी ने मनुष्यों के मानसिक विकास को प्रभावित किया ही था कि अब डीपफेक आ गया। जिसने मनुष्यों की मानसिक चिंता बढ़ा दी। पर यह है क्या...किसी वास्तविक फोटो, वीडियो और ऑडियो पर किसी दूसरे के चेहरे, आवाज़ आदि को फिट कर देना। इसका इस्तेमाल कर लोग किसी दूसरे के जीवन, मान-सम्मान, भावनाओं को ठेस पहुंचा रहें हैं ।

इसके कुछ उदाहरण भी हैं जैसे साउथ इंडियन एक्ट्रेस रश्मिका मंदाना का डीपफेक वीडियो बनाया गया जिसमें एक ब्रिटिश लड़की के चेहरे को हटाकर उनका चेहरा लगा दिया गया। इस पर उन्होंने कहा "यह बेहद डरावना है"। ऐसे ही बॉलीवुड एक्ट्रेस कैटरीना कैफ भी डीपफेक का शिकार हो गई और सारा तेंदुलकर भी डीपफेक का शिकार हुई जिसमें सारा तेंदुलकर अपने भाई के गले में हाथ डाले हुए थी पर उनके भाई के चेहरे को हटाकर क्रिकेटर शुभमन गिल का चेहरा लगा दिया गया और अब तो AI के डीपफेक से भारत के प्रधानमंत्री भी नहीं बच सके। पीएम मोदी एक वीडियो में गरबा करते नज़र आ रहे हैं पर यह डीपफेक वीडियो है इस पर उन्होंने खुद आपत्ति जताई। इन सबसे यह का गलत इस्तेमाल ना हो इसके लिए कड़े कदम उठे।

-प्रगती गुप्ता

चुनावी प्रचार में पीआर कवरेज पर जोर

नई दिल्ली : लोकतंत्र में जनता जिसे चाहे सिर आंखों पर बिठा दे और जब चाहे चुनाव में किसी को धूल चटा दे लेकिन पिछले कुछ चुनाव से देश में प्रचार की सूरत बदली है। अब चुनाव ग्राउंड से ज्यादा सोशल मीडिया पर लड़े जा रहे हैं। पूर्व में जहां राजनीतिक पार्टियां खुद अपना कैंपेन किया करती थीं, रैलियों-सभाओं के लिए लगकर मेहनत करती थी वहीं अब ये माहौल पूरी तरह बदला है। वर्तमान दौर में शायद ही ऐसा कोई बड़ा चुनाव हो जो बिना PR की मदद के लड़ा जा रहा हो। अब तमाम उम्मीदवारों और पार्टियों का इलेक्शन कैंपेन, इवेंट मैनेजमेंट या पीआर कंपनियां संभाल रही हैं। प्रत्याशी अपनी कैंपेनिंग के लिए इवेंट मैनेजमेंट/पीआर कंपनियों को हायर करने लगे हैं। पॉलिटिकल कंसल्टेंसी भी लगातार बढ़ रही है ।

आधुनिकता से भरे और सोशल मीडिया के इस युग में अपने आपको बेहतर और बढ़-चढ़कर दिखाने की होड़ सी लग गई है और अब यही रीत चुनावों में भी बड़े स्तर पर देखी जा रही है। सभी राजनीतिक पार्टियां विचारधाराओं से परे चुनाव के लिए मीडिया मैनेजमेंट, रैली मैनेजमेंट, सोशल मीडिया मैनेजमेंट तथा सुर्खियों में रहने वाले पोस्टर-वॉर आदि कराने के लिए इन मैनेजमेंट कंपनियों से संपर्क साधती हैं । बेशक जनता चुनाव जिताती या हराती है लेकिन अब पेशेवर पीआर कंपनिया बहुत हद तक रिजल्ट को प्रभावित करने लगी हैं। कई बार पीआर कंपनिया यहां तक दावा कर जाती हैं कि वे मनमाफिक चुनाव परिणाम लाने का माद्दा रखते हैं। पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव के कुछ महीने बाद ही अगले साल लोकसभा का भी चुनाव होना है, यानी पीआर कंपनियों के लिए ये पीक सीजन की तरह है। राजनीतिक दलों के चुनाव-प्रचार की बागडोर अब पेशेवर

पीआर कंपनी की ओर से चुनाव कवरेज पर दिव्यांशु राठौर

रणनीतिकारों द्वारा संभालने का ट्रेंड, पॉलिटिकल कंसल्टेंसी का बिजनस दिन-दुना रात चौगुना के हिसाब से फल-फूल रहा है। पीआर कंपनियों के चुनाव को प्रभावित करने वाले काम को हम निम्न प्वाइंटर्स के हिसाब से समझ सकते हैं ।

1. चुनाव प्रचार में उपयोगिता -

चुनाव के दौरान किसी भी पार्टी के जनसंपर्क अधिकारी को चुनाव प्रचार की जनसंपर्क सामग्री का निर्माण करना होता है जिसमें जनता से किए जाने वाले वादे, विकास की योजनाएं और लोगों को पार्टी तथा उम्मीदवार की ओर आकर्षित करने वाली बातें लिखी होती हैं। पीआर के आने के बाद इस काम ने भी वर्तमान टेक्नोलॉजी और कंसल्टेंसी का इस्तेमाल किया जाने लगा है। इसमें पार्टी के कार्यों के बारे में बताया जाता है जिससे जनता सटीक रूप से पार्टी के बारे में जान सके।

2. पार्टी के लिए मीडिया कार्यक्रम और रैली का आयोजन -

चुनाव के दौरान पार्टियां अपनी पूरे कार्यकाल का लेखा-जोखा मीडिया के माध्यम से जनता तक पहुंचाती है। जिससे लोगों का पार्टी के प्रति विश्वास पैदा होता है इसी तरह पार्टियां अपनी रेलियां व शक्ति प्रदर्शन करती हैं। जिसके पीछे पार्टियों का मंतव्य अपना समर्थन दिखाना होता है। इन सब को सुचारू रूप से चलाने का कार्य पीआर कंपनियों का ही होता है ।

3. जनमत का निर्माण -

किसी भी मुद्दे या विषय पर जनता की राय का निर्माण करना जनमत निर्माण कहलाता है। चुनाव में यही काम पीआर का भी होता है। ये उम्मीदवार की अच्छी छवि को दर्शाने के लिए हर संभव प्रयास करते हैं और लोगों में एक साफ सुथरी छवि और कल्याणकारी भावना वाली छवि प्रदर्शित करते हैं।

4. विभिन्न लोगों से संपर्क -

पीआर कंपनी अपने उम्मीदवार के लिए पार्टी की ओर से विभिन्न आयु वर्ग के लोग, अलग-अलग क्षेत्र और अलग-अलग धार्मिक भावना रखने वाले लोगों से संपर्क करती है और उन्हें पार्टी की तरफ आकर्षित करने का हर संभव प्रयास करती है ।

विभिन्न माध्यम -

वर्तमान अत्याधुनिक और सोशल मीडिया के युग में इंटरनेट से जुड़े तमाम प्लेटफॉर्म्स मौजूद हैं। पीआर कंपनियां प्रचार-प्रसार के लिए इनका प्रयोग करती हैं और चुनाव लड़ रहे उम्मीदवार की ओर से पोस्ट किए जाते हैं व सक्रियता दर्शाई जाती है। जैसे फेसबुक, इंस्टाग्राम, ट्विटर, यूट्यूब और व्हाट्सएप ग्रुप्स के साथ साथ अपने स्वयं के एप्स को व हर इंटरनेट प्लेटफार्म को रन किया जाता है। सोशल मीडिया के बढ़ते ट्रेंड में ट्रेंडिंग म्यूजिक, हैशटैग्स, डमी अकाउंट्स, कॉलिंग का प्रयोग करते हुए नेताओं की छवि भी यहां एक नए अंदाज में पेश की जाती है जो मन को भाने वाली और अपनी तरफ आकर्षित करने वाली होती है ।

पीआर के अहम खिलाड़ी -

चुनाव रणनीति के इस कारोबार में कई सारे बड़े खिलाड़ी हैं जिन्होंने अपना लोहा मनवाया है। चाहे वो 2014 के चुनाव हो या कोई और चुनावी रणनीति पीआर ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। प्रमुख पीआर कंपनिया IPAC, इंक्लूसिव माइंड्स, एबीएम, वराहे एनालिटिक्स, जारविस कंसल्टिंग, राजनीति इत्यादि कंपनियां हैं जो पीआर का कार्य करती हैं।

- दिव्यांशु राठौर

मगही संस्कृति का वर्तमान स्वरूप

नई दिल्ली : मगही संस्कृति यानी मगध की संस्कृति एक समय पर मगध महाजनपद के नाम से जाना जाने वाला यह साम्राज्य जिसका राजनैतिक विस्तार पूरे भारतीय उपमहाद्वीप तक फैला हुआ था और इसकी संस्कृति काफी समृद्ध थी जिसके गवाह अशोक के शिलालेख और स्तंभ आज भी दे रहे हैं। मगध जैन और बौद्ध संस्कृतियों की जन्मस्थली रहने के बावजूद वर्तमान की संस्कृति में उसका प्रभाव कहीं दिखाई नहीं देता, हालांकि उनके तीर्थस्थलों का महत्व अभी भी बरकरार है । दक्षिण बिहार के गया, जहानाबाद, अरवल, पटना, नालंदा, लखीसराय, नवादा, शेखपुरा, औरंगाबाद. झारखंड के हजारीबाग, चतरा, कोडरमा, बोकारो, धनबाद, गिरिडीह, पलामू, जामताड़ा और पश्चिम बंगाल के मालदा जिले में मगही भाषा और मगही संस्कृति की झलक दिखाई देती है ।

मगही संस्कृति अपनी लोकगीतों, विशिष्ट व्यंजनों, मगही भाषा और पर्व-त्योहारों के लिए प्रसिद्ध है ।

भाषा और संस्कृति का रिश्ता वैसा ही होता है जैसे गांव और शहर का। जहां जो भाषा बोली जाती है, वहां उसकी संस्कृति भी झलकती है ।

वर्तमान में मगही भाषा सिर्फ गांवों में वाचिक परंपरा में ही बची हुई है। लिखित में हिंदी और गायन में भोजपुरी ने इससे इसका अधिकार छीन लिया है। अब इसकी मूल लिपि कैथी का तो कोई नाम भी नहीं जानता। व्हाट्सएप और फेसबुक पर बातचीत भी अब रोमन में ही होती है ।

इसका साहित्य इसके वाचिक किस्से-कहानियां और गीतों में ही है। मगध की संस्कृति में लोकगीतों का स्थान महत्वपूर्ण है। यहां हर श्रम, हर मौसम, हर पर्व-त्यौहार पर सामूहिक गीत की परंपरा है। धान रोपते समय रोपनी गीत तो काटते समय कटनी गीत। इसी तरह यहां हर महीने में मौसम के हिसाब से अलग-अलग गीत गाए जाते हैं। जैसे चैत्र के महीने में चैतारा, फागुन में फगुआ तो सावन-भादो में कजरी की गूंज सुनाई देती है। ये गीत यहां की जीवन पद्धति और संस्कृति को दर्शाते हैं। इसी तरह पर्व-त्यौहार और शादी-विवाह में भी सोहर और गाली गाई जाती है। हालांकि, भोजपुरी गानों और डीजे के तेज आवाज में इसकी गूंज अब धीमी पड़ गई है ।

खानपान और भोजन रात में रोटी, दूध, सब्जी तो सुबह में चावल, दाल चलती है। सप्ताह में एकाध दिन मांसाहार भी हो ही जाता है। लेकिन यहां की जो सबसे प्रसिद्ध किफायती और स्वादिष्ट भोजन है, वो है विरंजा। हालांकि, यह सिर्फ शादी-विवाह या किसी विशेष अवसर पर ही बनता है और इसे बनाने वाले कारीगर भी इलाके में एक या दो ही होते हैं। इसके अलावा लिट्टी-चोखा, मुर्गा-भात और मिठाइयों में लोंगलता, तिलकुट, गाजा, खाजा और टिकरी (जिसे ठेकुआ भी कहते हैं) काफी प्रसिद्ध है। मगही संस्कृति अभी आधुनिकीकरण के दौर से गुजर रही है। मैथिली और भोजपुरी की तरह अब मगही भी सोशल मीडिया के माध्यम से पुनर्जीवित करने की कोशिशें हो रही हैं। मगधी बॉयज और सब लूल है जैसे अनेकों यूट्यूब चैनलों की सफलता सराहनीय है ।

- गोविन्द राज

अपूर्वा - फिल्म समीक्षा

प्रमुख कलाकार- तारा सुतारिया,धैर्य करवा,अभिषेक बैनर्जी,राजपाल यादव

लेखक - निर्देशक- निखिल नागेश भट्ट

अवधि - 1 घंटा 40 मिनट

प्रसारण प्लेटफार्म - Disney+ हॉटस्टार

आज के समय में फ़िल्ममेकर महिलाओं को प्रमुख कलाकार के रूप में दिखाने में काफी दिलचस्पी ले रहे हैं और दर्शकों को भी ऐसी फिल्में लुभा रही हैं। महिलाओं की ताकत का एहसास करने वाली फिल्में जैसे की अकेली और NH10 में प्रमुख महिला किरदार को बखूबी चित्रित किया है। अब निखिल नागेश भट्ट द्वारा लिखित और निर्देशित फिल्म अपूर्वा भी सच्ची घटनाओं से प्रेरित ऐसी ही कहानी है।

फिल्म की शुरुआत कर पर हमले के साथ होती है। चार डाकू सुखा,छोटा ,जुगनू, बल्ली दिखते हैं जो लूटपाट मचाते हैं। गुंडे ड्राइवर की हत्या कर देते हैं क्योंकि वह बस को आगे नहीं जाने देता है और यात्रियों से लूटपाट करने लगते हैं। गुंडे अपूर्व को किडनैप कर लेते हैं । वे उसे करने के प्लानिंग कर रहे होते हैं तभी एक पंडित रास्ता खोजने हुए उस इलाके में आ जाता है। गुंडे पंडित को भी बंधक बना लेते हैं। बाद में अपूर्वा पंडित के साथ भागने में कामयाब हो जाती है। इसके बाद खूनी खेल शुरू हो जाता है। अपूर्वा अपनी जान बचाने के लिए चंडी का रूप धारण कर लेती है।

निदेशक ने फिल्म के लिए बहुत अच्छा मुद्दा चुना है। फिल्म का केंद्रीय विषय अपूर्वा की सबसे बड़ी ताकत है जो फिल्म को चालू रखती है। अपूर्व में तारा सुतारिया ने बेहतरीन अभिनय से सभी को आश्चर्यचकित कर दिया है। इस फिल्म में उनकी भूमिका काफी चुनौती पूर्ण है। यह फिल्म एक महिला के किसी मुसीबत में फंसने पर अकेले ही उससे निकालने के बारे में है। फिल्म महिलाओं के लिए खतरनाक लड़ाइयों से लड़ने में प्रेरणादायक है। हालांकि फिल्म शुरू से पूर्वानुमानित है जो फिल्म के थ्रिलर को खराब करती है।

-सौम्या पटेल

कवि सम्मेलन का आयोजन

नई दिल्ली-भीमराव अंबेडकर महाविद्यालय में 21 नवंबर को हिंदी अकादमी, दिल्ली के सानिध्य में कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें आमंत्रित कवियों ने अपनी रचनाओं से लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया। जिसके मंच पर श्रृंगार, वीर, करुण,हास्य विधाओं का संगम देखने को मिला। विश्व - विख्यात शायर श्री मंगल नसीम ने सम्मेलन की अध्यक्षता की और महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. रवींद्रनाथ दूबे भी उपस्थित रहे। हिंदी अकादमी के सचिव संजय कुमार गर्ग ने सभी आमंत्रित कवियों का स्वागत किया और उन्होंने कहा कि ऐसे आयोजनों से ही भारतीय संस्कृति और भी समृद्धि होती है। समय-समय पर ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन होते रहना चाहिए। प्रो. रवींद्रनाथ दूबे ने बताया कि कविताएं, साहित्य का प्रकाश और जीवन का दीप पुंज होती है। सम्मेलन में प्रसिद्ध कवि अमित पुरी ने ' इस कहानी का आयाम हो जाऊं मैं, ……..तुम बनो राधिका, श्याम हो जाऊं मैं ' सुनाकर खूब तालियां बटोरीं व कवि प्रवीण कुमार पाण्डेय ने

'दिल में बसा के मुझसे निकाला नहीं गया, जबसे गए हो मुंह में निवाला नहीं गया….' सुनाकर माहौल में चार चांद लगा दिया। इसके अतिरिक्त अन्य कवियों ने भी काव्यपाठ किया। प्रसिद्ध कवि सुनहरी लाल तुरन्त, डॉ. प्रवीण शुक्ल, निकुंज शर्मा ने भी रचनाएं प्रस्तुत कीं। सम्मेलन की संचालिका, कवियत्री दीपाली जैन रहीं। हिंदी अकादमी ने इस सफल आयोजन के लिए महाविद्यालय का आभार जताया।

-सत्यम वर्मा

मोबाइल में क्या देखते हो?

नई दिल्ली- इस दुनिया में कोई भी ऐसा इंसान नहीं हैं जो फ़ोन का नाम न जानता हो। मोबाइल फ़ोन हमारे दैनिक जीवन की आवश्यकता बन गया हैं। ऐसे में उन लोगों की भी कमी नहीं है जो कहते हैं कि समाज बदल रहा हैं तो हम भी बदल रहें हैं और जब सारा काम ही फ़ोन पर होता हैं तो घंटे तक फ़ोन चलाने में क्या बुराई हैं ? ज़्यादातर लोगों का कहना हैं कि फ़ोन कम चलाना चाहिए कुछ लोग कहते हैं कि बच्चों को काम चलाना चाहिए लेकिन अफ़सोस ऐसा कहने वाले वो लोग ही घंटों तक फ़ोन चलाते हैं। यहां सवाल यह उठता है कि फ़ोन पर क्या देखते हैं आप ? क्योंकि दुनिया में मोबाइल का यूज़ करने वालों पर की गई अब तक की स्टडी से पता चला है कि जो भी लोग फ़ोन चलाते हैं उनमें से 70 से 80 प्रतिशत लोग वो हैं जो सिर्फ समय बर्बादी के लिए ही फ़ोन चला रहें हैं। उन्हें इंस्टाग्राम पर रीलस को स्किप करते रहने की लत लग गई हैं। वह सिर्फ उन्हें देखने में ही 10 से 12 घंटे बिता देते हैं। यूट्यूब पर ज्यादा समय बिताने वाले लोगों की

स्थिति यह है कि वह लोग सिर्फ किसी वीडियो को देखते हैं और हर बात पर अपने कमेंट देते रहते हैं जो कि कई बार सही नहीं होता क्योंकि यह भी ज्यादातर समय बर्बादी ही हैं जो समाज में हिंसा को भी बढ़ावा दे रहा हैं। व्हाट्सएप पर ज्यादा समय बिताने वालों को डीपी और स्टेटस बदलनें से ही फुर्सत नहीं हैं,अगर सारी बातों को हम ध्यान से समझे तो बस इतना पता चलता है कि इंस्टाग्राम, फेसबुक, यूट्यूब पर अपना चैनल बनाकर अपना कंटेंट अपलोड करने वालें दुकानदार की तरह अपना अच्छा-बुरा कंटेंट लोगों को ग्राहक समझ के बेच रहें हैं। जिससे उन्हें तो पॉपुलरिटी, पैसा मिलता हैं, लेकिन बस फ़ोन चलाने वालों की अंत में समय बर्बादी है। यह पूरी तरह सही नहीं हैं कि सिर्फ समय बर्बादी हैं पर ज्यादातर लोग जो देखते हैं वह कुछ भी नहीं सिर्फ 2 मिनट की दुनिया होती है जो रोज बदलती हैं यानी फ़ोन का इस्तेमाल चाहे कितना भी हो लेकिन इतना भी नहीं की 11 से 12 घंटे हम उसे पर बिताने लगें। इसे हमें बीमारियों का ही सामना करना पड़ रहा हैं। 2 से 3 साल के बच्चों को तो मां-बाप झुनझुन की तरह मोबाइल पकड़ा देते हैं। जिससे उनका मानसिक विकास रुक जाता है और कम उम्र में चश्मा लग जाता हैं। जब भी यह सवाल उठता है कि मोबाइल पर क्या देखते हैं आप ? तो यह कहना गलत नहीं है कि अपनी बर्बाद।

-रूपाली शर्मा

महाविद्यालय में दी गयी 'सिनेमा पर सीख'

नई दिल्ली- डॉ भीम राव अम्बेडकर कॉलेज में 'सिनेमा पर सीख' का वर्कशॉप डॉ भीमराव अंबेडकर महाविद्यालय में शुक्रवार 24 नवंबर 2023 को पत्रकारिता विभाग के द्वारा फिल्म मेकिंग वर्कशॉप का आयोजन किया गया। इस वर्कशॉप में डायरेक्टर रमेश विश्वकर्मा विशेषज्ञ के रूप में मौजूद रहे। यह वर्कशॉप पत्रकारिता के साथ जुड़े शब्द जनसंचार के अंतर्गत आने वाले सिनेमा विभाग पर केंद्रित था।

डायरेक्टर रमेश ने विद्यार्थियों को चलचित्र की बारीकियां फिल्म प्रोडक्शन की प्रक्रिया आदि सिखाया। उन्होंने बताया की फिल्म बनाने से पहले पोस्ट प्रोडक्शन में स्क्रिप्ट राइटिंग, डायलॉग राइटिंग, स्टोरी बोर्ड जैसे एहम पड़ावों का बहुत महत्व होता है। डायरेक्टर रमेश विश्वकर्मा ने लाइटिंग एवं भिन्न-भिन्न प्रकार के कैमरा एंगल और मूवमेंट के बारे में भी बताया।

विद्यार्थियों को मूक फिल्म की अवधारणा के बारे में बताते हुए डायरेक्टर रमेश ने कहा कि बिना शब्दों का प्रयोग किए विचारों को व्यक्त करना बहुत बड़ी कला है। मूक फिल्मों का प्रयोग दर्शकों को सहिष्णु मुद्दों पर संदेश देने के लिए किया जाता है। विद्यार्थियों को कुछ प्रसिद्ध मूक फिल्मों को दिखाकर उनका उदाहरण के रूप में प्रयोग किया गया जिससे वे फिल्म मेकिंग की छोटी से छोटी बारीकियां सीख सकें।

वर्कशॉप के दौरान विद्यार्थियों ने अपने विचारों के अनुसार कहानियों को लिखकर डायरेक्टर रमेश विश्वकर्मा को सुनाया, बड़ी संख्या में विद्यार्थियों ने इस वर्कशॉप में भाग लिया और फिल्म प्रोडक्शन सीखा।

इस वर्कशॉप की ट्रेनिंग का प्रयोग करके विद्यार्थियों को शॉर्ट फिल्म बनाने का कार्यभार सौंपा गया, जिसमें से चयनित फिल्मों को राष्ट्रीय स्तर पर प्रतियोगिता के लिए भेजा जाएगा।

-सक्षम पाण्डेय

शिक्षा में स्कॉलरशिप के अवसर

पैसे के आभाव से पढ़ाई प्रभावित न हो इसलिए सरकार द्वारा समय-समय पर तमाम स्कॉलरशिप निकाली जाती है। जिसके लिए पात्र स्टूडेंट अप्लाई कर सकते हैं और सेलेक्शन होने पर आर्थिक मदद पा सकते हैं। जिनकी सहायता से मेधावी और आर्थिक रूप से कमजोर छात्र अपनी पढ़ाई जारी रख सकते हैं। लेकिन सरकार द्वारा निकाली गई स्कॉलरशिप से इतर निजी संस्थान भी अपने कॉरपोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबलिट (CSR) फंड के माध्यम से विद्यार्थियों की सहायता के लिए स्कॉलरशिप लेकर आते हैं।

सरकारी स्कॉलरशिप की जानकारी विद्यार्थियों को होती है जिसका लाभ पात्र विद्यार्थी लेते हैं। लेकिन निजी संस्थान द्वारा निकाली गई स्कॉलरशिप की जानकारी के आभाव के कारण विद्यार्थी स्कॉलरशिप से चूंक जातें हैं। अगर आर्थिक रूप से कमज़ोर विद्यार्थियों को निजी संस्थान द्वारा दी जाने वाली स्कॉलरशिप की भी जानकारी हो तो उससे शिक्षा के रास्ते में आने वाली बाधा दूर हो सकेगी। इसलिए हमने जरुरी समझा कि कॉलेज के हिन्दी पत्रकारिता एवं जनसंचार पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों द्वारा निकाले जाने वाले प्रायोगिक समाचार पत्र BRAC मीडिया में उन स्कॉलरशिप की जानकारी दी जाए। जिससे विद्यार्थी निजी संस्थान द्वारा दी जाने वाली स्कॉलरशिप के बारे में भी जान सकें और उसका लाभ ले सकें।

1. BYPL सशक्त स्कॉलरशिप 23-24

ये स्कॉलरशिप केवल उन विद्यार्थियों के लिए है जो अंडरग्रेड्यूट के फाइनल ईयर में हैं।

इस स्कॉलरशिप की पात्रता क्या है?

कोई भी विद्यार्थी जो भारत का नागरिक है और दिल्ली का निवासी है। साथ ही विद्यार्थी किसी भी स्नातक पाठ्यक्रम के फाइनल ईयर में पढ़ रहा हो। विद्यार्थी ने अपने आखिरी एग्जाम में 55 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हों और सभी स्रोतों से विद्यार्थी की पारिवारिक वार्षिक आय 6 लाख रुपए से कम हो।

स्कॉलरशिप अप्लाई करने के लिए क्या डॉक्यूमेंट्स ज़रूरी हैं?

विद्यार्थी की पासपोर्ट साइज फोटोग्राफ, आधार कार्ड, मार्कशीट , विद्यार्थी के नाम से जो बैंक खाता है उसकी डिटेल्स और कॉलेज फीस की रसीद। इसके अलावा परिवार की आय का प्रूफ जिसके लिए सैलरी स्लिप, इनकम सर्टिफिकेट या फिर आईटीआर दे सकते हैं।

2. पारस स्कॉलरशीप प्रोग्राम 23-24

ये स्कॉलरशिप केवल उन विद्यार्थियों के लिए है जो अंडरग्रेड्यूट फर्स्ट ईयर में हैं।

इस स्कॉलरशिप की पात्रता क्या है?

कोई भी विद्यार्थी जो भारत का नागरिक है और B.Com., BBA, B.Sc., B.A., BBI में से किसी कोर्स में पढ़ रहा हो। साथ ही विद्यार्थी किसी भी स्नातक पाठ्यक्रम के फर्स्ट ईयर में पढ़ रहा हो। विद्यार्थी ने अपने आखिरी एग्जाम में 50 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हों और सभी स्रोतों से विद्यार्थी की पारिवारिक वार्षिक आय 5 लाख रुपए से कम हो।

स्कॉलरशिप अप्लाई करने के लिए क्या डॉक्यूमेंट्स ज़रूरी हैं?

विद्यार्थी की पासपोर्ट साइज फोटोग्राफ, आधार कार्ड, मार्कशीट, विद्यार्थी के नाम से जो बैंक खाता है उसकी डिटेल्स और कॉलेज आईडी कार्ड। इसके अलावा परिवार की आय का प्रूफ जिसके लिए सैलरी स्लिप, इनकम सर्टिफिकेट या फिर आईटीआर दे सकते हैं। यदि विद्यार्थी के पास जाति प्रमाण पत्र है तो उसे भी दे सकते है।

4. Zस्कॉलर्स प्रोग्राम 2023–24

इस स्कॉलरशिप की पात्रता क्या है?

कोई भी विद्यार्थी जो भारत का नागरिक है और B.Com., BBA, B.Sc., B.A. में से किसी भी कोर्स में पढ़ रहा हो। विद्यार्थी का शिक्षा संस्थान दिल्ली, पुणे, बेंगलुरू या चेन्नई में स्थित हो। साथ ही विद्यार्थी किसी भी स्नातक पाठ्यक्रम के फर्स्ट ईयर में पढ़ रहा हो। विद्यार्थी ने 12th बोर्ड एग्जाम में 60 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हों और सभी स्रोतों से विद्यार्थी की पारिवारिक वार्षिक आय 8 लाख रुपए से कम हो।

स्कॉलरशिप अप्लाई करने के लिए क्या डॉक्यूमेंट्स ज़रूरी हैं?

विद्यार्थी की पासपोर्ट साइज फोटोग्राफ, आधार कार्ड, मार्कशीट, विद्यार्थी के नाम से जो बैंक खाता है उसकी डिटेल्स और कॉलेज आईडी कार्ड या फीस स्लिप। इसके अलावा परिवार की आय का प्रूफ जिसके लिए सैलरी स्लिप, इनकम सर्टिफिकेट या फिर आईटीआर दे सकते हैं।

स्कॉलरशिप में अप्लाई कैसे करें?

इन स्कॉलरशिप को अप्लाई करने के लिए कहीं भी जाने की ज़रूरत नही है। विद्यार्थी घर बैठे–बैठे Buddy4Study की वेबसाइट (www.buddy4study.com) पर जाकर इन स्कॉलरशिप में अप्लाई कर सकतें हैं।

-मो सैफ

शिक्षक सहयोगी : प्रो. बिजेन्द्र कुमार, प्रो. शशि रानी
डिज़ाइन परिकल्पना : नीरज कुमार, योगेश
छात्र सहयोगी : मो.सैफ, विनय, सक्षम पांडेय, सत्यम वर्मा, प्रगति गुप्ता, दिव्यांशु राठौर, गोविन्द राज, सौम्या पटेल, नरसिंह साहू , रूपाली शर्मा

डिस्क्लेमर: ब्राक मीडिया के इस प्रायोगिक समाचार-पत्र में छपी सामग्री लेखक के अपने विचार है, इस सामग्री का सपादकीय टीम से कोई संबंध नहीं है।